भट्टारक श्रुतकीर्ति

जीवन-परिचय : भट्टारक श्रुतकीर्ति भट्टारक देवेन्द्रकीर्ति के प्रशिष्य और त्रिभुवनकीर्ति के शिष्य थे। श्रुतकीर्ति सुलेखक, चिन्तक, बहुश्रुतज्ञ और प्रभावक विद्वान थे।

श्रुतकीर्ति का समय उनकी रचनाओं के आधार पर विक्रम संवत् की 16वीं शती सिद्ध होता है।

रचना-परिचय : भट्टारक श्रुतकीर्ति द्वारा लिखित निम्न कृतियाँ उपलब्ध हैं—

1. हरिवंशपुराण : हरिवंशपुराण वृहद्काय रचना है। इसमें 47 सन्धियाँ हैं और 22वें तीर्थंकर भगवान नेमिनाथ का जीवन चरित अंकित है। इसकी रचना जेरहट नगर के नेमिनाथ चैत्यालय में विक्रम संवत् 1552 माघ कृष्ण पञ्चमी सोमवार के दिन की है।

2. धर्मपरीक्षा : इस ग्रन्थ में 149 कड़वक हैं। इसमें पौराणिक मान्यताओं की व्यंग्यशैली में समीक्षा की गयी है। इस ग्रन्थ की रचना विक्रम संवत् 1552 में हुई है।

3. परमेष्ठीप्रकाशसार : इस ग्रन्थ की रचना विक्रम संवत् 1553 को श्रावक मास पंचमी के दिन हुई है। इसमें 3000 पद्य हैं और ग्रन्थ सात परिच्छेदों में विभक्त है। इस ग्रन्थ की पांडुलिपि आमेर-भंडार में सुरक्षित है।

4. योगसार : यह ग्रन्थ दो परिच्छेदों में विभक्त है। इसमें गृहस्थोपयोगी सैद्धान्तिक बातों पर प्रकाश डाला गया है। साथ ही मुनिचर्या का भी वर्णन है।